# 8. १००८ श्री चन्दाप्रभुजी

वंश
अजित

चिन्ह
चन्द्रमा

वर्ण
शुक्लवर्ण

चौदहवीं
मनोवेगा

## अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिन मन्दिर जावो।
अष्ट कर्म के नाश करन को श्री जिन चरण चढ़ावों॥
चंचल चित्त को रोकि, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो।
चारू चरण आचरण चतुर नर चन्द्रप्रभ चित्त धारो॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्णा-५

गर्भकल्याणक

चौथ कृष्णा-११

जन्मकल्याणक

चौथ कृष्णा-११

तपकल्याणक

फाल्गुन कृष्णा-७

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री महासेन राजा
माता: सुलक्षणा देवी
मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

फाल्गुन शुक्ला-७

मोक्षकल्याणक